



संदेश

प्रिय साथियों,

यह वर्ष अन्य वर्षों से विशेष अलग है क्योंकि उत्पादन के निर्धारित लक्ष्य को हमें पूरा करना है और इस दिशा में हमलोग अग्रसर हैं। इसके अलावा भारत सरकार द्वारा लिये गये कई लोकोपयोगी, समाजोपयोगी एवं कल्याणकारी निर्णयों को पूर्णतः लागू करना है।

दोस्तों, आप अवगत ही होंगे कि 14 सितम्बर 1949 को ही संविधान सभा ने हिन्दी की सरलता, सक्षमता, संप्रेषणता एवं इसकी वैज्ञानिकता को देखकर इसे देश की राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की थी। किसी भी देश के सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक दृष्टिकोण को जानने का सशक्त माध्यम उस देश की भाषा ही होती है। यह देश की सभ्यता और संस्कृति का संवाहक है। पिछले वर्षों में हमारी कंपनी ने बहुत सारे लक्ष्यों को न सिर्फ प्राप्त किया है बल्कि कई कीर्तिमान भी स्थापित किये हैं। तथापि राजभाषा के क्षेत्र में निर्धारित लक्ष्य को यथार्थतः हमें अभी भी प्राप्त करना है। मैं मानता हूँ कि इस दिशा में हमने काफी काम किया है परंतु अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है।

प्रौद्योगिकी के आधुनिक युग में कार्य का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जिसमें हिन्दी माध्यम से सरलता, सुस्पष्टता एवं शुद्धता पूर्वक कार्य संपादित न किया जा सके। इसलिए सभी साथियों से अनुरोध है कि अपने पास उपलब्ध नवीनतम यांत्रिक संसाधनों का भरपूर उपयोग करके सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अपना अमूल्य योगदान दें।

आइये, हम सब मिलकर अपनी भाषा की अस्मिता, प्रतिष्ठा, सम्मान तथा राष्ट्रीयता से जुड़े अभिमान एवं शान को कायम रखने का संकल्प लें और अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप अपने कार्यालयों में लक्ष्यानुरूप कार्य राजभाषा में ही संपादित कर कोयला उद्योग को बुलंदियों तक पहुँचाने के प्रयास में जुट जायें। यही हमारे लिए सरल परंतु सुदृढ़ संकल्प होगा।

14 सितम्बर 2016

सु. भट्टाचार्य
(सुतीर्थ भट्टाचार्य)